JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पर्यावरण प्रदूषण के प्रति छात्र-शिक्षकों के दृष्टिकोण और जागरूकता का अध्ययन

पूनम
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र
डी.एस. कॉलेज, अलीगढ
पूर्व सम्बद्ध डॉ भीम राव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, आगरा

डॉ बीना कुमारी
प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)
डी.एस. कॉलेज, अलीगढ
पूर्व सम्बद्ध डॉ भीम राव
अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
आगरा

सार

पर्यावरण के प्रति छात्रों और समाज का नजरिया बदलकर शिक्षक हमारे पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। विद्यार्थी शिक्षक राष्ट्र के भावी शिक्षक हैं। इसलिए यह बडी चिंता का समय है। प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा और संरक्षण तभी संभव हो सकता है जब हम संबंधित मामलों में उचित जागरूकता के प्रति सही प्रकार का दृष्टिकोण रखें। शिक्षक जागरूकता और दृष्टिकोण ला सकते हैं जो पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से संभव हो सकता है। स्कूलों और कॉलेजों में पर्यावरण शिक्षा का लक्ष्य छात्रों को पर्यावरणीय समस्याओं और चिंताओं से परिचित कराना और संवेदनशील बनाना है, ताकि उनमें पर्यावरण के प्रति स्वस्थ व्यक्तिगत और सामाजिक दृष्टिकोण और व्यवहार विकसित किया जा सके। इसलिए, यह जानना आवश्यक है कि छात्र शिक्षक पर्यावरण और पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में कितने जागरूक हैं। उत्तर प्रदेश के अलीगढ जिले में स्थित शिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत 120 विद्यार्थी शिक्षकों का चयन कर एक पायलट अध्ययन किया गया। डॉ. एम. राजमणिक्कम द्वारा विकसित पर्यावरण प्रदूषण दृष्टिकोण स्केल और प्रवीण झा द्वारा विकसित पर्यावरण जागरूकता क्षमता उपाय (ईएएएम) का उपयोग डेटा के संग्रह के लिए किया गया था। निष्कर्षों से पता चलता है कि पुरुष छात्र शिक्षकों की तुलना में महिला शिक्षक शिक्षकों का पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक पाया गया। पर्यावरण शिक्षा को छात्रों को पर्यावरण से संबंधित समस्याओं और मुद्दों के बारे में विश्लेषण, मूल्यांकन और निष्कर्ष निकालने में सक्षम बनाना चाहिए।

मुख्य कुंजी: पर्यावरणीय दृष्टिकोण, पर्यावरण जागरूकता, छात्र शिक्षक।

परिचय

पर्यावरण बाहरी भौतिक स्थितियों का संयोजन है जो जीव की वृद्धि, विकास और अस्तित्व को प्रभावित और प्रभावित करता है। पर्यावरण एक ऐसा शब्द है जिसमें पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी जीवित और निर्जीव पदार्थ शामिल हैं जिनमें सभी पौधे, जानवर, चट्टानें आदि और उनकी सीमाओं के भीतर होने वाली प्राकृतिक घटनाएं शामिल हैं। इसमें सार्वभौमिक प्राकृतिक संसाधन और भौतिक घटनाएं शामिल हैं जिनमें स्पष्ट सीमाओं का अभाव है, जैसे कि हवा, पानी और जलवायु के साथ–साथ ऊर्जा, विकिरण, विद्युत आवेश और चुंबकत्व, जो मानव गतिविधि से उत्पन्न नहीं होते हैं। बोरिंग के अनुसार, किसी व्यक्ति के वातावरण में उस उत्तेजना का कुल योग होता है जो उसे गर्भधारण से लेकर मृत्यु तक प्राप्त होता है।

पॉल ब्रूक्स के अनुसार, "पर्यावरण बाहरी भौतिक स्थितियों का संयोजन है जो जीव की वृद्धि, विकास और अस्तित्व को प्रभावित और प्रभावित करता है।" इस सदी की सबसे विनाशकारी घटना हमारे प्राकृतिक संसाधनों का तेजी से क्षरण है। जनसंख्या विस्फोट ने इस स्थिति को और भी खराब कर दिया है। लोगों ने एक तरफ प्राकृतिक संसाधनों को खत्म करना शुरू कर दिया और दूसरी तरफ पृथ्वी पर प्रदूषण पैदा किया जिससे पारिस्थितिकी तंत्र में पारिस्थितिक संतुलन प्रभावित हुआ। प्रजातियों के संरक्षण और वनों के संरक्षण के संबंध में पर्यावरणीय जागरूकता की कमी सकल मूल स्तर पर पर्यावरणीय खरीद में गिरावट के लिए जिम्मेदार है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो मानव सभ्यता को विनाशकारी स्थिति का सामना करना पडेगा। पर्यावरण जागरूकता मानव समाज को पारिस्थितिक संतुलन की रक्षा के लिए तैयार करती है। पर्यावरण शिक्षा का उद्देश्य उनमें हमारी प्रकृति की रक्षा के लिए ज्ञान, दृष्टिकोण, कौशल और संचार विकसित करना है।

पर्यावरण प्रदूषण के प्रति दृष्टिकोण

प्रदूषण हवा, पानी और मिट्टी की भौतिक, रासायनिक और जैविक विशेषताओं में एक अवांछनीय परिवर्तन है जो जीवन को हानिकारक रूप से प्रभावित कर सकता है या किसी भी जीवित जीव के लिए संभावित स्वास्थ्य खतरा पैदा कर सकता है। पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ है संसाधनों के दोहन के लिए मानवीय गतिविधियों के कारण स्थानीय स्तर पर पर्यावरण की गुणवत्ता में कमी आना। पर्यावरण प्रदूषण को ऊर्जा पैटर्न, विकिरण स्तर, रासायनिक और भौतिक संविधानों की प्रचुरता में परिवर्तन के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव के माध्यम से मनुष्य की कार्रवाई के उपोत्पाद के रूप में हमारे आस–पास के पूर्ण या बडे पैमाने पर प्रतिकूल परिवर्तन के रूप में व्यक्त किया जा सकता है।

जीवों का" औद्योगीकरण एवं शहरीकरण के कारण पर्यावरण प्रदूषण बढ रहा है। पर्यावरण प्रदूषण के लिए मनुष्य स्वयं जिम्मेदार है क्योंकि उसने प्रकृति के नियमों का उल्लंघन किया है।

दृष्टिकोण किसी चीज के बारे में एक विशेष भावना है। इसलिए, इसमें उन स्थितियों में एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने की प्रवृत्ति शामिल होती है जिनमें कुछ शामिल होता है। मनोवृत्ति व्यवहार का पैटर्न प्रदान करती है। ये प्रेरणा के शक्तिशाली स्रोत हैं और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने की दिशा में एकाग्रता प्रयासों को जगाने और बनाए रखने में सक्षम हैं।

थर्स्टन का दृष्टिकोण, दृष्टिकोण किसी विशिष्ट विषय के बारे में मनुष्य के झुकाव और भावनाओं, पूर्वाग्रह या पूर्वाग्रह, प्रति–कल्पित धारणाओं, विचारों, भय, खतरों के कुल योग को दर्शाता है। ऑलपोर्ट का विचार है, एक दृष्टिकोण निर्देशों को क्रियान्वित करने की तत्परता का एक मानसिक या तंत्रिका सेट है।

व्यक्ति पर सभी वस्तुओं और स्थितियों का गतिशील प्रभाव उससे संबंधित होता है।" पर्यावरण प्रदूषण विकसित और विकासशील दोनों देशों में एक समस्या है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करने की सख्त जरूरत है।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता

पर्यावरण सभी जीवित प्राणियों के विकास और वृद्धि को प्रभावित करने वाला एक परिवेश या परिस्थितियाँ है। इन समस्याओं को हल करने के लिए जागरूकता आवश्यक है क्योंकि बच्चे हमारे देश का भविष्य हैं, न केवल पर्यावरण के बारे में ज्ञान को शामिल करने की आवश्यकता है, बल्कि युवा मन को पर्यावरण की समस्याओं और चिंताओं से परिचित कराने और संवेदनशील बनाने की भी आवश्यकता है। पर्यावरण जागरूकता शब्द का तात्पर्य पर्यावरण संबंधी समस्याओं को हल करने के लिए धारणा, दृष्टिकोण, मूल्यों और आवश्यक कौशल में परिवर्तन लाकर पर्यावरणीय मुद्दों, उनके कारणों के बारे में सामान्य जागरूकता पैदा करना है। छात्रों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए, उनमें पर्यावरण प्रदूषण और संबंधित प्रतिकूल प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदा करना आवश्यक है। यह महत्वपूर्ण समय है कि जनता के बीच विशेषकर युवाओं और शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों के छात्र–शिक्षकों के बीच पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरण संवेदनशीलता पैदा की जानी चाहिए। समाज की जागरूकता के लिए स्थूल स्तर पर कार्य करना आवश्यक है। ताकि पूरा समाज पर्यावरण को बचाने के लिए काम कर सके।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

बीसवीं सदी में तकनीकी क्रांति ने मनुष्य के लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न की हैं। शहरीकरण, औद्योगीकरण, स्वचालन और जनसंख्या विस्फोट तकनीकी क्रांति का परिणाम हैं। अनियंत्रित आर्थिक विकास, भूजल प्रणालियों का अत्यधिक उपयोग और प्राकृतिक संसाधनों का दोहन आज की आम बात बन गई है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा को पूरी तरह से लागू करना समय की मांग है। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या इतनी भयावह है कि अकेले सरकार द्वारा इससे निपटना संभव नहीं है। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से लडना सभी स्वैच्छिक संगठनों, स्कूलों और कॉलेजों का कर्तव्य है। शिक्षकों का यह कर्तव्य है कि छात्र शुरू से ही इस खतरे के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए। इस विकट समस्या के प्रति छात्रों, शिक्षकों और समाज का नजरिया बनाने की सख्त जरूरत है। जांच से यह महसूस किया जाता है कि पर्यावरण को किसी भी समस्या से मुक्त बनाने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जाए। पर्यावरण शिक्षा जनता को पर्यावरण के बारे में शिक्षित करने का एक संगठित प्रयास है जो हमें यह जानने में मदद करता है कि कैसे अनियंत्रित और अनियोजित विकास हवा, पानी और मिट्टी को प्रदूषित करता है और इस तरह हमारे निर्वाह और अस्तित्व को खतरे में डालता है। पानी, बिजली, डिटर्जेंट, रसायन, प्लास्टिक, लकडी आदि के उपयोग से संबंधित कई पर्यावरणीय समस्याएं शहरी और ग्रामीण दोनों लोगों में सिर्फ एक स्थानीय आयाम हैं। शिक्षकों का यह कर्तव्य है कि वे छात्रों को तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करें जिससे पारिस्थितिक संतुलन की जटिल प्रणाली और उसमें मनुष्य के स्थान की समझ पैदा होगी। उत्तर प्रदेश के अलीगढ जिले में स्थित है जो एक औद्योगिक क्षेत्र है जहाँ प्रदूषण की समस्या बहुत चिंता का विषय है। इसने अन्वेषक को पर्यावरण प्रदूषण के प्रति छात्र शिक्षकों के दृष्टिकोण और जागरूकता को जानने के लिए एक पायलट अध्ययन करने का प्रयास करने के लिए प्रेरित किया।

समस्या का कथन

अध्ययन का शीर्षक है **"पर्यावरण प्रदूषण के प्रति छात्र शिक्षकों के दृष्टिकोण और जागरूकता का अध्ययन"**।

अध्ययन का उद्देश्य

1. पुरुष एवं महिला छात्र–शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर का पता लगाना।

2. पर्यावरण प्रदूषण के प्रति छात्र शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

3. पर्यावरण प्रदूषण के प्रति पुरुष एवं महिला छात्र शिक्षकों के दृष्टिकोण में अंतर का पता लगाना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों के पुरुष और महिला छात्र शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

2. पर्यावरण प्रदूषण के प्रति शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों के पुरुष और महिला छात्र शिक्षकों के दृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

अध्ययन का डिजाइन

प्रस्तुत शोध कार्य एक वर्णनात्मक अध्ययन था। इसका संबंध दो या दो से अधिक चरों के बीच कार्यात्मक संबंध से है। परिणाम परीक्षण के लिए अतिरिक्त और प्रतिस्पर्धी परिकल्पनाओं का सुझाव दे सकते हैं। वर्तमान अध्ययन के लिए पर्यावरण प्रदूषण के प्रति छात्र शिक्षकों के दृष्टिकोण और जागरूकता का आकलन करने के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया था।

जनसंख्या: वर्तमान अध्ययन उत्तर प्रदेश के अलीगढ जिले में आयोजित किया गया था। उत्तर प्रदेश के अलीगढ जिले में स्थित शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों के विद्यार्थी–शिक्षकों को अध्ययन की जनसंख्या के रूप में गठित किया गया।

प्रतिदर्श: उत्तर प्रदेश के अलीगढ जिले में स्थित विभिन्न शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों का दौरा करके 120 छात्र–शिक्षकों के चयन के लिए सरल यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया था। वहाँ पुरुष और महिला शिष्य–अध्यापकों की संख्या समान थी।

डेटा संग्रह के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरण

1. डॉ. एम. राजमणिक्कम द्वारा विकसित "पर्यावरण प्रदूषण दृष्टिकोण स्केल"।

2. प्रवीण झा द्वारा विकसित "पर्यावरण जागरूकता क्षमता उपाय (ईएएएम)" का उपयोग वर्तमान अध्ययन के लिए किया जाएगा।

डेटा संग्रहण की प्रक्रिया

प्रवीण झा द्वारा विकसित "पर्यावरण जागरूकता क्षमता उपाय (ईएएएम)" और डॉ. एम. राजमणिक्कम द्वारा विकसित "पर्यावरण प्रदूषण दृष्टिकोण स्केल" को डेटा संग्रह के लिए छात्र शिक्षकों पर प्रशासित किया गया था और छात्र शिक्षकों द्वारा की गई प्रतिक्रियाओं को स्कोर किया गया, सारणीबद्ध किया गया और विश्लेषण किया गया.

डेटा का विश्लेषण और विवेचन

पुरुष और महिला कॉलेजों के छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता की तुलना:

पुरुष और महिला छात्र शिक्षकों के पर्यावरण जागरूकता के परीक्षण अंकों के औसत और मानक विचलन की गणना और व्याख्या की गई। जैसा कि तालिका 1 में दिखाया गया है, परिकल्पना की आगे 'टी' परीक्षण लागू करके जांच की गई।

तालिका 1: पर्यावरण जागरूकता की दिशा में पुरुष और महिला छात्र-शिक्षकों के बीच माध्य, मानक विचलन और टी–मूल्य

छात्र	प्रतिदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
पुरुष छात्र शिक्षक	60	48.35	4.21	1.21	असार्थक
महिला छात्र शिक्षक	60	51.21	4.78		

पुरुष और महिला कॉलेजों के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता के औसत अंकों के बीच टी–अनुपात की गणना 1.21 पाई गई जो कि 0.05 और 0.01 के महत्व के स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए यह स्पष्ट है कि पुरुष और महिला छात्र शिक्षकों के पर्यावरण जागरूकता के औसत अंकों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है। पर्यावरण जागरूकता के प्रति महिला शिक्षक अपने समकक्ष पुरुष छात्र शिक्षकों की तुलना में अधिक जागरूक पाई गईं। पर्यावरण संरक्षण के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षक दोनों समान रूप से जागरूक हैं।

पर्यावरण प्रदूषण के प्रति पुरुष और महिला छात्र शिक्षकों के बीच दृष्टिकोण की तुलना:

पुरुष और महिला छात्र शिक्षकों के बीच पर्यावरण प्रदूषण दृष्टिकोण के माध्य, एसडी और टी मान निम्नलिखित तालिका –2 में प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका 2: पुरुष और महिला छात्र शिक्षकों के बीच तुलना पर्यावरण प्रदूषण के प्रति दृष्टिकोण

कॉलेज का प्रकार	प्रतिदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
पुरुष छात्र शिक्षक	60	58.76	6.84	2.79	सार्थक
महिला छात्र शिक्षक	60	53.57	6.23		

पर्यावरण प्रदूषण के प्रति पुरुष और महिला छात्र शिक्षकों के दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण सार्थक 2.79 आंका गया, जो 0.01 और 0. 05 दोनों स्तरों पर सार्थक है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला गया कि पर्यावरण प्रदूषण के प्रति पुरुष छात्र शिक्षकों के रवैये का औसत स्कोर महिला छात्र शिक्षकों की तुलना में अधिक पाया गया। महिला छात्र शिक्षकों की तुलना में पुरुष छात्र शिक्षक पर्यावरण प्रदूषण के प्रति अधिक सकारात्मक रूप से जागरूक पाए गए।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

1. अध्यापक शिक्षा महाविद्यालयों के अधिकांश छात्र–अध्यापक पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूक पाये गये।

2. पर्यावरण जागरूकता के संदर्भ में पुरुष और महिला छात्र शिक्षकों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

3. पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति महिला छात्र शिक्षक पुरुष छात्र शिक्षकों की तुलना में अधिक जागरूक पाए गए।

4. पर्यावरण प्रदूषण के प्रति पुरुष छात्र शिक्षक महिला छात्र शिक्षकों की तुलना में काफी अधिक सकारात्मक पाए गए।

निष्कर्ष

पर्यावरण प्रदूषण के प्रति पुरुष और महिला छात्र शिक्षकों के दृष्टिकोण के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। पर्यावरण शिक्षा का बहुत महत्व है क्योंकि हमारा जीवन काफी हद तक पर्यावरण से संबंधित उभरती समस्याओं के प्रति हमारी प्रतिक्रिया पर निर्भर करता है। पुरुष और महिला छात्र शिक्षकों में पर्यावरण जागरूकता की समान क्षमता नहीं है। पुरुष छात्र शिक्षकों की तुलना में महिला छात्र शिक्षक पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति अधिक जागरूक पाए गए।

संदर्भ

1. सर्वश्रेष्ठ जे.डब्ल्यू. और खान जे.वी. "शिक्षा में अनुसंधान" (2005)

2. भाटिया एस. सी. "पर्यावरण चेतना और वयस्क शिक्षा" (1980)

3. गुप्ता, ए. (1986): "पर्यावरण शिक्षा के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन " शिक्षा में अनुसंधान का चौथा सर्वेक्षण (1983–88) खंड II।

4. कुमार, पी (2012)। उच्चतर माध्यमिक के बीच पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन छात्र और इसे प्रभावित करने वाले कुछ शैक्षिक कारक। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बहुविषयक अनुसंधान, 1(7).

5. रॉबिन्सन, जे.डब्ल्यू. (1996): "ग्लोबल थिंकिंग प्रोजेक्ट का मध्य पर प्रभाव पर्यावरण के प्रति स्कूली छात्र" निबंध सार इंटरनेशनल, वॉल्यूम. –57, क्रमांक–4, पृ.–1548.